155
946
H
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1201/10/81

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 946

REGISTRAR'S ... DEPARTMENT
RECEIVED
10 DEC. 1930

Ran Bheri in Hindi
946
Kalfurf

आज़ाद ग्रन्थ माला का द्वितीय पुष्प

॥ वन्दे मातरम् ॥

सारी दुनियां कांप उठेगी डोलेंगे दल हिल जावेगा।
शान्ति क्रान्ति हुन्कारों से लन्दन भी हिल जावेगा॥

रण भेरी

संग्रह कर्ता

नारायण प्रसाद बिलथरे

प्रकाशक

फूलचन्द जैन बुकसेलर

जवाहरगंज जबलपुर

प्रथम बार] १९३० ई० [मूल्य -)॥

मुद्रक—सूरजभानजी गुप्त, केसरी प्रेस, बेलनगञ्ज, आगरा

891.431
B 498 A

मेरी अर्ज़ ।

ख़ुदा इस मुल्क को दुश्मन से अब बचा देना ।
करें जो ज़्यादती हम पर उन्हें सज़ा देना ॥ ख़ुदा० ॥
फंसाया जालमें हमको फ़िरंगी गुलामिये कौम ।
रिहा कर फांस में सख़्ती जिसम छुटा देना ॥ ख़ुदा० ॥
गवाह के जुल्म जो ढाते हैं भूल के हमको ।
नज़र में जिनकी है आया जो तुम मिटा देना ॥ ख़ुदा० ॥
हमारे मुल्क की इज़्ज़त घटाई है जिसने ।
न खाया तर्स है हम पर उन्हें सज़ा देना ॥ ख़ुदा० ॥
अज़ीज़ बच्चों पर ये गोली चलाई जलियां में ।
लहू से उनके भी हम लहू बहा देना ॥ ख़ुदा० ॥
हज़ारों सह चुके मजबूर हो बड़े गांधी ।
फ़क़त आज़ाद हों या पास निज बुला लेना ॥ ख़ुदा० ॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 946
Date 27:12.71
GOVT. OF INDIA

ग़ज़ल

ए आलसी उठो अब देखो ये क्या हुआ है ।
रोशन लगी है दुनियां अब होगया सवेरा ॥
जिस में पड़े र तुम सुख स्वप्न देखते थे ।
वह मोह रात बीती अब होगया सवेरा ॥

भागा है मुंह छिपाकर दासत्व का अन्धेरा ।
पूरब में लाली छाई अब होगया सवेरा ॥
पंछी लगे सुनाने स्वाधीनता के गाने ।
क्या ही समाँ बंधा है अब होगया सवेरा ॥
तारे जो दूर से ही थे रहनुमाई करते ।
वे हैं लगे खिसकने अब होगया सवेरा ॥
झूठी चमक दिखाकर जुगनू ने नाम पाया ।
है दीखता न वह भी अब होगया सवेरा ॥
उल्लू था मानों फौजी कानून से डराता ।
अब कौन पूछता है अब होगया सवेरा ॥
क्या क्या कहूं कि कैसा रंग पलटा दुनियां ने ।
खुद उठके देखलो तुम अब होगया सवेरा ॥
सत्याग्रह के जल से मुख कालिमा को धोलो ।
लग जाओ काम में अब होगया सवेरा ॥
यह कर्म क्षेत्र तुमको हंस २ बुला रहा है ।
करना न अब किनारा अब होगया सवेरा ॥

मौत से मत डरो ।

बुजदिलों को ही सदा मौत से डरते देखा ।
गो कि सौ बार उन्हें रोज ही मरते देखा ॥
मौत से वीरों को हमने नहीं डरते देखा ।
तख्तए मौत पर भी खेल ही करते देखा ॥

मौत इकबार जब आना है तो डरना क्या है।
हम सदा खेल ही समझा किये, मरना क्या है॥
वतन हमेशा रहे शाद काम और आज़ाद।
हमारा क्या है, अगर हम रहें, रहें, न रहें॥

वीर-प्रण।

मचादो धूम हिन्द में ये घर घर स्वराज्य लेंगे स्वराज्य लेंगे।
न आत्म अर्पण न अब हमें डर स्वराज्य लेंगे स्वराज्य लेंगे॥
करेंगे सफल हम आत्म निर्भर स्वराज्य लेंगे स्वराज्य लेंगे।
स्वराज्य सुख शांतिका है रहबर स्वराज्य लेंगे स्वराज्य लेंगे॥

रण भेरी।

(१) बढ़ो बढ़ो हे भारत वीरो ऋषियों की प्यारी सन्तान।
स्वतंत्रता के महासमर में हो जाओ सहर्ष बलिदान॥
धर्म युद्ध में मरना भी है अमर स्वर्ग पदको पाना।
रण भेरी बज चुकी वीरवर पहिनो केसरिया बाना॥
(२) माता के सच्चे पूतों की आज कसौटी होता है।
देखें कौन निकलता पीतल कौन निकलता सोना है॥

उतरेगा जो आज युद्ध में वही शूर है मरदाना ।
रण भेरी बज चुकी वीरवर पहिनो केसरिया बाना ॥

(३) यह मदांध शासन उलटा दो शक्ति शांति मय वारों से ।
अन्यायी अरिको दहला दो अपने प्रबल प्रहारों से ॥
स्वतंत्रता की विजय पताका ऊंची फहराते जाना ।
रण भेरी बज चुकी वीरवर पहिनो केसरिया बाना ॥

(४) बिना आत्म बलिदानों के कब किसने स्वतंत्रता पाई ।
लाखों भेंट हुए माता के चरणों में तब वह आई ॥
आज हमें भी दुनियाँ को अपना पौरुष है दिखलाना ।
रण भेरी बज चुकी वीरवर पहिनो केसरिया बाना ॥

(५) साठ बरस के बूढ़े गांधी देव बढ़े जाते हैं आज ।
कैसे तुम्हें युवक कहलाते उसमें तनिक न आती लाज ॥
इस विडम्बना मय जीवन से तो अच्छा है मर जाना ।
रण भेरी बज चुकी वीरवर पहिनो केसरिया बाना ॥

(६) वीरो निर्भय होकर करमें न्याय रूप तलवार धरो ।
इस पशुबल प्रधान अत्याचारी कलि का संहार करो ॥
आज हमें भारत में फिर प्राचीन सतयुग है लाना ।
रण भेरी बज चुकी वीरवर पहिनो केसरिया बाना ॥

(७) विजय वाहिनी दुर्गाकी सेना के मतवाले सिंहो ।
देश धर्म पर प्राण निछावर कर दो हे भारत सिंहो ॥
निकले आज महा कोशल से लाखों शिव प्रताप राणा ।
रण भेरी बज चुकी वीरवर पहिनो केसरिया बाना ।

(८) जिस माताकी पुण्य कोख से राम कृष्णगोपाल हुए।
जिसकी स्वर्ग तुल्य गोदी में भगत कन्हैयालाल हुए॥
वीर प्रसूता उस जननी के आप पुत्र हैं मरदाना।
रण भेरी बज चुकी वीरवर पहिनो केसरिया बाना॥

(९) जिसकी वीर भुजाओं को लखकर थर्राता था संसार।
शोक आज वह दुर्विपाक से बना हुआ है कारागार॥
हमें घोर इस पराधीनता से है छुटकारा पाना।
रण भेरी बज चुकी वीरवर पहिनो केसरिया बाना॥

(१०) मरना है जब एक रोज तब वीर मृत्युसे क्यों न मरो।
अपना भी जीवन सार्थक कर मातृ भूमिके क्लेश हरो॥
इस सुवर्ण अवसर को प्यारे तुम्हें चाहिए अपनाना।
रण भेरी बज चुकी वीरवर पहिनो केसरिया बाना॥

(११) कायरता को दूर भगाकर हिम्मत से आगे आओ।
जै जै भारत माताकी जय कहते हुए बढ़े जाओ॥
स्वतंत्रता जो जन्म सिद्ध अधिकार हमारा है पाना।
रण भेरी बज चुकी वीरवर पहिनो केसरिया बाना॥

(१२) अहो भाग्यसे धर्म युद्धका शुभ अवसर अब है आया।
दैवयोग से सेना नायक भी गांधी सा है पाया॥
फिर भी मुख मोड़े जो रणसे धिक् उसका जगमें आना।
रण भेरी बज चुकी वीरवर पहिनो केसरिया बाना॥

(१३) उधर प्रदर्शन पशु बलका है इधर आत्मबल शक्ति खड़ी।
चलें तोप तलवार उधर से इधर धर्म की ढाल खड़ी॥

अन्यायी का अब ही से नामो निशान है मिटजाना ।
रण भेरी बज चुकी वीरवर पहिनो केसरिया बाना ॥
(१४) उठो वीरगण अंत अहिंसा-रणमें तो पग धरना है ।
मातृ भूमिकी बलिवेदी पर हंसते हंसते मरना है ॥
इसी आखिरी संगर में हमको पौरुष है दिखलाना ।
रण भेरी बज चुकी वीरवर पहिनो केसरिया बाना ॥

रण क्षेत्र में ।

प्यारे स्वदेश प्रेमी रण की करो तयारी ।
दर्शाओ अपना जौहर सजकर नई सवारी ॥
इतने समय में तुमने बोया है बीज जो कुछ ।
अब काटने का उसके आया समय तुम्हारी ॥
तलवार सत्याग्रह की बांधो कमर में कसके ।
दृढ़ ढाल हो अहिंसा रक्षा करे तुम्हारी ॥
हो वन्देमातरम् की रण में नई सवारी ।
स्वाधीनता का हमको करना है युद्ध भारी ॥
हैं गांधीजी तुम्हारे नेता प्रधान नायक ।
उनके पीछे हमको चलना है क्षेत्र कारी ॥
अब सोचने का हमको हरगिज़ समय नहीं है ।
आओ समर में लड़के पावें विजय सुखारी ॥

शहीदों का संदेश ।

दिन खून का हमारे प्यारे ! न भूल जाना ।
खुशियों में अपनी हम पर आसू बहाते जाना ॥
सैय्याद ने हमारे चुन २ के फूल तोड़े ।
वीरान इस चमन में अब गुल खिलाते जाना ॥
गोली को खाके सोये जलियान बाग में हम ।
सूनी पड़ी कबर पर दीया जलाते जाना ॥
हिन्दू और मुसलिमों की होती है आज होली ।
बहते हमारे खूं में दामन भिगोते जाना ॥
कुछ कैद में पड़े हैं, हम कब्र में पड़े हैं ।
दो बूंद आसू इन पर "प्रेमी" बहाते जाना ॥

गज़ल ।

एक दिन दुनियां में इक़बाल था हिन्दुस्तान का ।
आज कल बिगड़ा हुआ है हाल हिन्दुस्तान का ॥
क्या कहूँ अब हाय मुझ से कुछ कहा जाता नहीं ।
लुट रहा है मुफ्त जर और माल हिन्दुस्तान का ॥
होगी ईश्वर की दया इस दीन भारत पर अगर ।
हो नहीं सकता है बांका बाल हिन्दुस्तान का ॥
हो स्वदेशी उन्नती गर और हो हम एक दिल ।
दूर हो दम भर में सब जंजाल हिन्दुस्तान का ॥
देश के हित के लिये गर हर बसर तैयार हो ।
माल भी बढ़ता रहै हर साल हिन्दुस्तान का ॥